श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

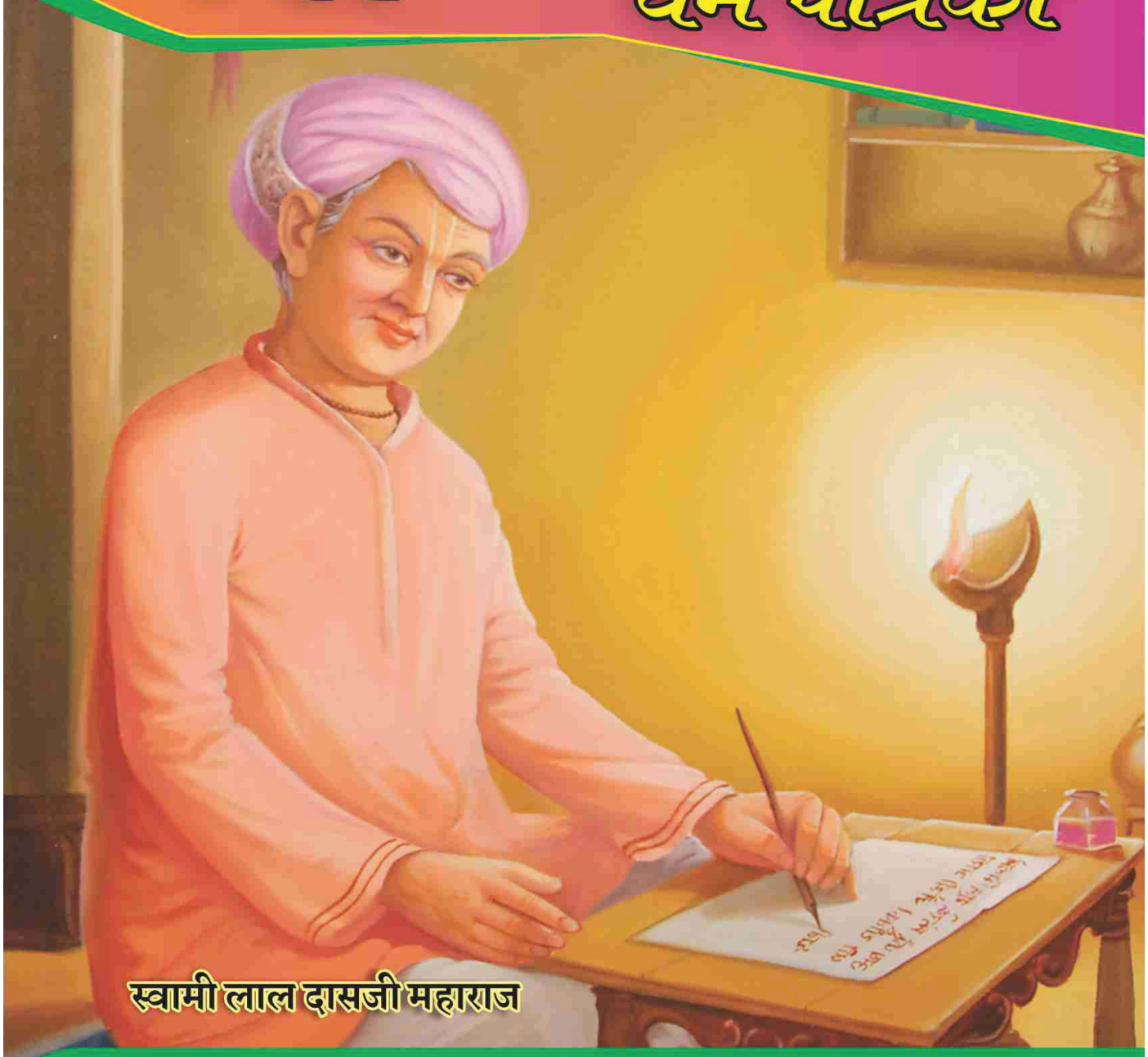

स्वामी लाल दासजी महाराज

वर्ष : ९३

जुलाई २०२१

अंक : ७

श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर

१

www.krishnapranami.org

श्री ५ नवतनपुरी धाममें छत्रसाल जयन्ती का कार्यक्रम ।

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर नेशवील USA का १९ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न ।

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

संस्थापक : ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराज

वि . सं : २०७८ निजानन्दाब्द : ४३८ बुद्धजी शाका : ३४३

वर्ष : ९३ जुलाई २०२१ अंक : ०७

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजड़ा मन्दिर जामनगर - ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक : स्वामी श्री लक्ष्मणदेवजी महाराज

श्री कनकराय व्यास

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर 361 001

फोन : (0288) 267 2829 मो : 08511226600

E-mail : patrika@krishnapranami.org / navtanpuri@gmail.com

Website : www.krishnapranami.org / patrika

व्रत - उत्सव

दिनांक २४/०७/२०२१	गुरु पूर्णिमा
दिनांक २६/०७/२०२१	तीज उपवास
दिनांक २७/०७/२०२१	चौथ उपवास
	श्री प्राणनाथजीकी धामगमन तिथि
दिनांक २८/०७/२०२१	श्री वीतक कथा प्रारम्भ
दिनांक २२/०८/२०२१	रक्षाबंधन, मिलाप एवं आचार्यश्री धर्मदासजी महाराजकी पुण्यतिथि ।
दिनांक ३०/०८/२०२१	श्री कृष्ण जन्माष्टमी ।
दिनांक ३१/०८/२०२१	नन्दमहोत्सव ।
दिनांक ०७/०९/२०२१	वार्षिक श्रीमद्भागवत कथा प्रारम्भ । श्री ५ नवतनपुरी धाम

श्री तारतम सागर

(संक्षिप्त परिचय)

अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराज

श्री तारतम सागर महामति श्री प्राणनाथजीकी दिव्य वाणीका संकलन है । विश्वमें प्रचलित विभिन्न धार्मिक मत–मतान्तर मान्यता, विचार धारायें एवं सिद्धान्त पृथक् –पृथक् अथवा मिश्रित रूपसे समाहित होनेसे महामति श्री प्राणनाथजीके समग्र उपदेशके नवनीतको **श्री तारतम सागर** कहा गया है ।

तारतम शब्द मूलतः संस्कृत भाषाके तारतम्य शब्दसे उद्भव हुआ है जिसका अर्थ होता है रहस्य । शास्त्रोंमें निर्दिष्ट राजविद्या, ब्रह्मविद्या, पराविद्या आदिका रहस्य स्पष्ट होनेसे श्री तारतम सागर ग्रन्थ यथार्थतः रहस्योंका सागर है । विश्वका समग्र आध्यात्मिक चिन्तन इस एक ही ग्रन्थमें समाहित होकर एकाकार हुआ है जिस प्रकार पृथ्वीकी सम्पूर्ण नदियाँ सागरमें समाहित होकर एकाकार हो जाती हैं ।

इस ग्रन्थको तारतम सागर, कुलजम स्वरूप, श्री मुखवाणी, श्री प्राणनाथ वचनामृत, स्वरूप साहब, श्री प्राणनाथ वाणी प्रभृति विभिन्न नामोंसे पुकारा गया है । यह ज्ञान एवं भक्तिका अथाह सागर है जिसकी तलस्पर्शी गहराईमें उतरनेसे साधक अपनी साधनाके चरमोत्कर्षको प्राप्त होता है अर्थात् उसे ब्रह्म साक्षात्कारका अनुभव होता है । इस विशालकाय ग्रन्थमें धर्मके सिद्धान्त, दर्शन, साधना पद्धति एवं मान्यताओंके साथ–साथ परब्रह्म परमात्माका नाम, रूप, लीला एवं धामका विशद वर्णन जिस तन्मयताके साथ हुआ है ऐसा अन्य किसी भी धर्म ग्रन्थमें उपलब्ध नही है ।

अधिकांश धर्मग्रन्थ परमात्मा एवं परमधामके विषयमें 'नेति नेति' कहकर मौन हो जाते हैं जबकि इस ग्रन्थमें हजारों चौपाइयोंके द्वारा उनका विस्तृत वर्णन हुआ है। साथ ही विभिन्न मत मतान्तर एवं धर्ममें प्रचलित बाह्य आडम्बरसे मुक्त होकर धर्मके शुद्ध स्वरूपके पालनकी प्रक्रिया तथा एक उदात्त, सुशिक्षित एवं स्वस्थ समाजकी रचनाकी बात इसमें स्पष्ट रूपसे कही गई है।

प्रत्येक सुन्दरसाथके लिए अपने मूल स्वरूप पर आत्मा, मूल घर परमधाम एवं आपने स्वामी पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचानके लिए मार्गदर्शिका होनेसे इस महाग्रन्थको पूर्णब्रह्म परमात्माकी वाङ्मय मूर्तिके रूपमें पधराकर श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिरोंमें तथा सुन्दरसाथके गृह मन्दिरोंमें इसका पूजन, पठन तथा पारायण किया जाता है।

इस ग्रन्थमें कुल १८७५८ चौपाइयाँ संकलित हैं तथा यह महाग्रन्थ रास, प्रकाश, षटऋतु, कलश, सनंध, किरन्तन, खुलासा, खिलवत, परिक्रमा, सागर, सिनगार, सिन्धी, मारफत सागर, कयामतनामा प्रभृति चौदह अवान्तर ग्रन्थोंका समष्टि स्वरूप है। इसमें हिन्दी, गुजराती, सिन्धी, अरबी आदि भाषाओं तथा अरबी फारसी मिश्रित हिन्दी एवं जाटी आदि बोलियोंका प्रयोग हुआ है। सभी ग्रन्थोंका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है,

श्री रास ग्रन्थ

श्री रास ग्रन्थ 'श्री तारतम सागर' महाग्रन्थका प्रथम ग्रन्थ है। यह गुजराती भाषामें है। इसमें कुल ४७ प्रकरण एवं ९०२ चौपाइयाँ हैं। इसका अवतरण विक्रम संवत १७१४-१५ में श्री नवतनपुरी जामनगरमें हुआ है। अक्षरातीत श्री कृष्ण-श्रीराजजी एवं ब्रह्मात्माओंकी आनन्दमयी लीलाओंका विस्तृत वर्णन होनेसे दिव्य प्रेम रससे आप्लावित इस ग्रन्थको इंजील (अंजील) भी कहा गया है।

''रसो वै सः'' कह कर अक्षरातीत श्रीकृष्णको रसरूप अथवा रसराज बताया गया है। उनकी दिव्य लीला रास लीला है। रास शब्द समूहका द्योतक भी है । रसराज श्रीकृष्णजी अपनी अंगनाओंको परमानन्दकी अनुभूति करवानेके लिए इस लीलामें अनेक रूपमें प्रकट हुए। इसी ब्राह्मी लीलाका वर्णन होनेसे यह ग्रन्थ 'श्री रास' कहलाया।

इसमें प्रारंभके पाँच प्रकरण रासकी अनुभूतिके लिए योग्यताका निदर्शन करवाते हैं । इसलिए उनको ग्रन्थकी भूमिकाके रूपमें माना गया है। मूलतः ग्रन्थका शुभारंभ श्रीश्यामाजीके सिनगारसे हुआ है। सर्वप्रथम अवतरित प्रकरण भी यही है। निजानन्दचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज श्री श्यामाजीके अवतार हैं। उनके धामगमनके पश्चात् उनकी स्मृतिमें एक मेला करनेका आयोजन महामति श्री प्राणनाथजीने किया था । उसी समय उनको नजरबन्द(हबसा)में रहना पड़ा । वहाँ पर सद्गुरुका विरह इतना तीव्र बना कि महामति अपने देहभावको ही भूल गए। उसी समय उन्हें रास लीलाके दर्शन हुए। सर्वप्रथम श्री श्यामाजी पर उनकी दृष्टि पड़ी और उन्होंने उनका स्वरूप एवं श्रृंगारका वर्णन किया,

अखण्ड स्वरूपनी अस्थिर आकारे, सोभा कहुं घणवे करीने सनेह ।
जोई जोई वचन आणुं कै ऊंचा, पण न आवे वाणी माहें तेह ॥

तदनन्तर ब्रह्मात्माओं एवं श्री राजजीपर उनकी दृष्टि पड़ी और उन्होंने उनके श्रृंगारका वर्णन किया।

श्रीकृष्णकी वंशीध्वनि सुनकर जैसे ब्रह्मात्माएँ गृहत्याग एवं देहत्याग कर वृन्दावन पहुँचती हैं उस समय योगमायाने उनको शरीर एवं श्रृंगार प्रदान किया । श्रीकृष्णजीने ब्रह्मात्माओंकी परीक्षाके लिए लोक मर्यादा एवं वेद मर्यादाकी बात कही थी उसका उल्लेख महामतिने श्रीमद्भागवतकी भाँति किया। तदनन्तर वृन्दावनके दृश्य दिखाते हुए प्रकृतिका मनोहर वर्णन किया।

महामतिने रासके साक्षात् दर्शन किए और अनेक रामतों(क्रीडाओं) का वर्णन किया उनमें हमची, आँखमिचौनी, फूदड़ी, भूलभूलवनी, गढकी रामत, करताली, घूमरड़ी, कोणियां, आम्बाकी रामत, उडन खटोला आदि विशेष हैं । महामतिका यह मौलिक वर्णन है । इस प्रकारका वर्णन श्रीमद्भागवत, गर्गसंहिता आदि श्रीकृष्णलीलापरक ग्रन्थोंमें कहीं भी नहीं है । इसी प्रकार अन्तर्धानके पश्चात् महारासकी लीलाएँ हुई । उसके लिए श्रीकृष्णके भजनानन्दस्वरूपका उल्लेख किया है । तदनन्तर जलक्रीड़ा(झीलना), भोग(भोजन) एवं परस्पर बैठकर वार्तालाप करनेका प्रसंग भी अन्यत्र नहीं मिलता है ।

गोपियाँ अन्तर्धानके समयकी विरह वेदना व्यक्त करती हुई श्री कृष्णसे प्रार्थना करती हैं, प्रभो ! अब हमें वहाँ पर ले चलें जहाँ कभी भी वियोग नहीं होता है,

हवे वाला हुं एटलुं मांगु, खिण एक अलगा न थैए ।
जिहां अमने व्रह नहीं, चालो ते घर जैए ॥

वास्तवमें विरह रहित घर तो परमधाम ही होता है । महामतिने यह भी स्पष्ट किया है कि पूर्णब्रह्म परमात्माने ब्रह्मात्माओंकी सुरताको थोड़े क्षणके लिए परमधाम लौटाया किन्तु दुःखरूप जगतका खेल देखनेकी उनकी इच्छा शेष रह जानेसे पुनः उन्हें नश्वर जगतमें भेज दिया ।

इस प्रकार रास ग्रन्थमें लीला वर्णनके साथ साथ अनेक रहस्य भी स्पष्ट किए हैं ।

श्री प्रकाश ग्रन्थ

श्री प्रकाश ग्रन्थ श्री तारतम सागरका द्वितीय ग्रन्थ है । यह मूलतः गुजराती भाषामें है । महामतिने स्वयं इसका हिन्दी भाषान्तर भी किया । इस ग्रन्थका अवतरण वि. सं. १७१४-१५ में श्री नवतनपुरी, जामनगरमें हुआ । इसमें कुल ३७ प्रकरण एवं १०६४ चौपाइयाँ हैं ।

श्री प्रकाश ग्रन्थ रास लीलाके रहस्यको प्रकाशित करता है । पूर्णब्रह्म परमात्माने अपनी आत्माओंको व्रज एवं रासकी लीलाओंका अनुभव करवाया । इन लीलाओंमें श्री कृष्ण साथमें थे इसलिए ब्रह्मात्माओंको नश्वर जगतके सुख-दुःखोंका अधिक अनुभव नहीं हुआ । महामति कहते हैं, **'प्रेम पियासों न करे अन्तर, तो ए दुख देखे क्योंकर ।'** वस्तुतः परमात्मा साथमें हों तो दुःख भी दुःख जैसे नहीं लगते हैं । ब्रह्मात्माओंको सांसारिक दुःख-सुखोंका अनुभव करवाकर जागृत करनेके लिए जागनी लीलाका आजोजन किया गया है । प्रकाश ग्रन्थ जागनीका प्रथम सोपान है । इसके प्रारम्भमें ब्रह्मात्माओंका अवतरण एवं उन्हें जगानेके लिये श्री श्यामाजीको सद्गुरुके रूपमें भेजनेका उल्लेख है । वे सुन्दरसाथको अपनी मूल बात याद दिलाकर सचेत करते हैं । श्री राजजीने श्री श्यामाजीको अपनी शक्ति प्रदान कर ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेके लिए सद्गुरुके रूपमें भेजा । ब्रह्मात्माएँ उनके वचनोंको समझ नहीं पाई । महामतिकी आत्मा इन्द्रावतीने सद्गुरुके धामगमन होने पर उनके विरहमें सन्तप्त होकर विरह वेदनाके द्वारा सद्गुरु एवं उनके उपदेशोंका महत्त्व समझाया है । इस ग्रन्थके कुछ प्रकरणोंमें इन्द्रावतीकी विरहवेदना व्यक्त हुई है । तदनन्तर अनेक प्रकरणोंमें ब्रह्मात्माओंको स्वयं जागृत होकर दूसरोंको जागृत करनेके लिए प्रेरणा दी गई है । उनमें मार्कण्डेयका दृष्टान्त, राजा परीक्षित एवं शुकदेवजीका संवाद, वेहद वाणी, प्रकटवाणी आदि मुख्य हैं । सूत कातनेके उदाहरण द्वारा कर्तव्यका बोध करवाया है । लक्ष्मीजीके दृष्टान्त द्वारा श्री कृष्णजीकी सर्वोपरिता समझाई है । बेहद वाणी द्वारा क्षर, अक्षर एवं अक्षरातीतका रहस्य स्पष्ट किया है ।

इस प्रकार प्रकाश ग्रन्थ अज्ञानरूप आवरणको दूर कर आत्माको प्रकाशित करता है ।

श्री षटऋतु ग्रन्थ

षटऋतु ग्रन्थ तारतम सागरका तृतीय ग्रन्थ है। यह भी गुजराती भाषामें है। इसमें कुल १० प्रकरण एवं २३० चौपाइयाँ हैं। इसका अवतरण वि. सं. १७१४-१५ में नवतनपुरी जामनगरमें हुआ है। इसमें दो विभाग हैं, (१) षटऋतु एवं (२) बारमासी। षटऋतुमें आठ प्रकरण हैं जिनमें छः ऋतुओंके छः प्रकरण एवं अधिकमास एवं षटऋतुके कलशके एक एक तथा बारमासीके दो प्रकरण हैं। एक विरहिणी आत्मा छः ऋतुओंके प्राकृतिक दृश्योंको देखती हुई अपने प्रियतम परमात्माके विरहमें किस प्रकार व्याकुल होती है, उसका निदर्शन इस ग्रन्थमें करवाया है। अन्तमें श्री कृष्णजीके मथुरा जाने पर गोपियोंकी भाव-विह्वलताका वर्णन कर विरहिणी आत्माकी विरह व्यथाको समझानेका प्रयत्न किया है। इस ग्रन्थकी एक-एक चौपाइयोंका भावपूर्वक मनन करने पर ब्रह्मात्माको श्रीराजजीके विरहका अनुभव अवश्य होगा।

श्री कलस ग्रन्थ

श्री कलश ग्रन्थ श्री तारतम सागरका चतुर्थ ग्रन्थ है। यह भी मूलतः गुजराती भाषामें है। महामतिने स्वयं इसका हिन्दी भाषान्तर किया है। इसकी आरंभिक चौपाइयोंका अवतरण वि. सं. १७१४-१५ में नवतनपुरी जामनगरमें हुआ और ग्रन्थका शेष भाग वि. सं. १७२९ में सुरतमें पूर्ण हुआ। इसमें कुल १२ प्रकरण एवं ५०६ चौपाइयाँ हैं। **'शास्त्र शब्द मात्र जो वाणी, ताको कलश वाणी शब्दातीत'** कहकर महामतिने ज्ञानग्रन्थोंके कलशके रूपमें इसे शिरोमणि कहा है। यह ग्रन्थ तत्त्वज्ञानसे परिपूर्ण है। इसमें प्रथम प्रकरणमें ही आत्मा एवं परमात्माकी वार्तालापका उल्लेख है। निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजके मनमें बाल्यकालसे ही जिज्ञासा रहती थी कि, मैं कौन हूँ,

यह संसार क्या है, परमात्मा कहाँ हैं, उनके साथ मेरा सम्बन्ध है या नहीं ? आदि आदि.....। उन्होंने अनेक वर्षों तक खोज की । चालीस वर्षकी आयुमें उन्हें पूर्णब्रह्म परमात्माके दर्शन प्राप्त हुए और परमात्माने उन्हें तारतम-ज्ञान प्रदान किया, मन्त्र दिया एवं पातालसे परमधाम पर्यन्तका अनुभव करवाया । यह सम्पूर्ण प्रसंग प्रथम प्रकरणमें है । दूसरे एवं तीसरे प्रकरणमें नश्वर जगतके खेलका सुन्दर चित्रण किया है । तदुपरान्त नश्वर जगतमें प्रचलित विभिन्न मत-मतान्तर एवं पन्थोंके खींचातानकी बात की है । विराट ब्रह्माण्डकी उलझनें, वेदोंका रहस्य, अवतारोंका प्रकरण, जागनीका प्रकरण, गोकुल लीला, जोगमायाका प्रकरण, दयाका प्रकरण, हँसीका प्रकरण आदिके पश्चात् जागनीके प्रकरण हैं ।

इस ग्रन्थमें परमात्माको क्षर अक्षरसे परे अक्षरातीतके रूपमें बताकर उनका स्वरूप शून्य निराकारसे परे सच्चिदानन्द बताया है । आत्मा जागृत होने पर ही सच्चिदानन्दकी अनुभूति हो पाएगी । इसलिए आत्म जागृतिमें बाधक विभिन्न मत-मतान्तर एवं बाह्य आडम्बरोंका चित्रण कर उनसे आगे बढ़नेकी बात कही है । सम्पूर्ण शास्त्र मूलतः आत्म ज्ञान एवं ब्रह्मज्ञान प्रदान करनेके लिए हैं । इस रहस्यको कथानकोंके द्वारा समझानेका प्रयत्न शास्त्रोंमें किया गया है । सामान्य जन मात्र कथानकोमें ही भूल जाते हैं और शास्त्रोंके गूढ रहस्योंको समझनेका प्रयत्न नहीं करते हैं । इसलिए कथानक एवं प्रकृतिके वर्णन मात्रसे सन्तुष्ट न होकर आत्मज्ञान एवं ब्रह्मज्ञानके लिए गहराईमें उतरनेकी बात यहाँ पर की गई है ।

(क्रमशः.....)

श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके मूल स्तम्भ

संत श्री अमृतराज महाराज, नवतन धाम (काठमाडौं)

(गतांक पृष्ठ १९ से क्रमश.....)

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पद्धति

१. सद्गुरु ब्रह्मानन्द-सच्चिदानन्द ब्रह्मकी आनन्द अंग श्यामाजी हैं । सर्वसृष्टिके सूत्रधार अक्षर ब्रह्म ही सूत्र है । शिखा चोटी इनसे भी परे अनुपम चिद्घन स्वरूप अद्वैत अक्षरातीत ब्रह्म है ।

२. पुरुषोत्तम श्री कृष्णकी ही हम सेवा करते हैं । हमारा गोत्र चिदानन्द है । परम किशोरी श्री श्यामाजीके स्वामी श्री कृष्ण इष्ट, और पतिव्रता धर्मके द्वारा अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति पूजाका साधन है ।

३. श्री कृष्ण प्रदत्त षोडशाक्षर तारतम मंत्रके द्वारा युगल किशोरका हम जप करते हैं । ब्रह्म विद्या हमारी देवी है । सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीको जहाँ पर तारतम मंत्र मिला, उन्होंने जहाँपर आचार्यपीठकी स्थापना की, वही नवतनपुरी इस सम्प्रदायकी पुरी तथा धाम है ।

४. एस सौ आठ पक्ष हमारी शाखा और गोलोक शाला है। सद्गुरुके दिव्य चरण ही हमारा क्षेत्र है जहाँ समर्पित होकर हमारे सभी दुःख संताप मिट जाते हैं।

५. नित्य वृन्दावनमें हमें नित्यानन्द प्राप्त है। महाविष्णुको हम ऋषि मानते हैं। आत्मानुभूतिसे प्राप्त स्वसंवेद तारतम सागर ग्रन्थ है । निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज द्वारा श्री ५ नवतनपुरी धाममें प्रकट की गई दिव्य परमधामकी यमुना जी हमारा तीर्थ है ।

६. श्रीमद्भागवत शास्त्रका हम श्रवण मनन करते हैं । बुद्धजीका अलौकिक दिव्य ज्ञान ही आत्म जागृतिका मूल साधन मानते है । हमारे कुलका मूल श्रोत ही आनन्दसे है अतः उसमें नित्य विहार करना हमारी साधनाका परम लक्ष्य और फल है ।

७. दिव्य ब्रह्मपुर हमारा परमधाम है वहीं अक्षरातीत स्वामीके साथ हम निवास करते हैं । हमारे सम्प्रदायका नाम निजानन्द आत्माको आनन्द प्रदान करने वाला है और हमारा धर्म श्री कृष्ण प्रणामी है ।

८. निजानन्द प्रकट करने वाले, श्री देवचन्द्रजी सद्गुरु हैं । उन्होंने ही इस सम्प्रदायको प्रकट किया । उनके द्वारा ही हमने परमपद और परम मोक्षका द्वार खोलनेकी विधिको जाना ।

सूक्ष्म दर्शन पक्ष :

पूर्णब्रह्म परमात्मा अनादि अक्षरातीत श्री कृष्ण सच्चिदानन्द स्वरूप शुद्ध साकार नित्य दिव्य किशोरावस्था अनन्त स्वलीलाद्वैत अर्थात् अखण्ड दिव्य धाम लीलादि अनन्तानन्द एवं अपार शक्ति सम्पन्न हैं ।

पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण प्राप्तिका मुख्य साधन या उपाय अनन्य परा प्रेमलक्षणा माधुर्य गोपी भावकी भक्ति है ।

तीन पुरुष हैं :

१. क्षर :- प्राकृत जगत देवलोको सहित अनित्य विनाशशील हैं ।

२. अक्षर :- कूटस्थ नित्य अविनाशी सत्ता, सच्चिदानन्दके सत अंग है ।

३. अक्षरातीत :- अक्षरात्परतः परः । कूटस्थ अक्षरसे भी पार अखण्ड, अनन्त और अद्वैत उत्तम पुरुष है ।

तीन प्रकारकी सृष्टि :

१. ब्रह्मसृष्टि - नित्यमुक्त २. ईश्वरीसृष्टि -मुमुक्षु ३. जीवसृष्टि - बद्धमुक्त षोडशाक्षर 'तारतम मंत्र' सर्वपाप नाशक और मोक्षदायक है ।

४. मानसिक पूजाको सर्वोत्तम माना है । परमात्माके वाङ्मय स्वरूप तारतम सागरकी सेवा-पूजा करना ही आत्मा कल्याण मानसिक पूजाके साधन प्रतीक है ।

५. शास्त्र श्रवण श्रीमद्भागवत है । जाग्रत बुद्धिका ज्ञान तारतम ज्ञान है उसके द्वारा ही सम्पूर्ण शास्त्रोंका रहस्य स्पष्ट होता है और आत्माओंकी जागृति होती है ।

६. ११ वर्ष ५२ दिनकी कृष्ण लीला ही अनादि अक्षरातीतकी ब्रह्मलीला मानी जाती है।

७. गौरवलाघव पूर्वक समस्त शास्त्र ग्रन्थोंको प्रमाण माना है। शब्द, अनुमान, उपमान और प्रत्यक्ष ये चार प्रकारके प्रमाणमें से शब्द प्रमाण द्वारा ब्रह्मबोध होता है। ऐसी हमारी अवधारणा है।

८. श्री प्राणनाथजीने वीतक ग्रन्थमें मांस, मदिरा, परस्त्री गमन, चोरी और तम्बाकू आदिको निषिद्ध और आत्मपथका अवरोधक बताया है। यही श्री कृष्ण प्रणामी धर्मका संविधान भी है।

अगिन चौरासी लाख भोगवी, अन्ते आव्या मानुख ॥

वैदिक सनातन हिन्दू धर्म, एवं हिन्दू संस्कृति तथा परम्पराके अनुसार जीव चौरासी लाख योनियोंमें भटकते-भटकते अन्तमें मानव तनको प्राप्त करता है। मानव तन क्षणभंगुर होते हुए भी एक अनमोल रत्न है। संसार परिवर्तनशील है, हर वस्तुमें प्रतिपल परिवर्तन होता रहता है। मानव जीवन पल-पल विनाशकी ओर दौड़ रहा है। अन्तमें जाकर समूल नष्ट हो जाएगा, इसलिए हमें आध्यात्मिक मार्गसे अविनाशी तत्त्वकी खोज करनी चाहिए, जिससे फिर इस नश्वर संसार और क्षणभंगुर शरीरको प्राप्त करके दुःख भोगना न पड़े।

धर्म हमेशा अंधकारसे प्रकाशकी ओर, मृत्युसे अमरत्वकी ओर और अन्धकारसे प्रकाशकी ओर जानेके लिए हमें सत्प्रेरणा देता है। इसलिए हमें धर्मको अपनाकर धार्मिक आचारणमें प्रवृत्त होना चाहिए। शास्त्र वचनोंका मनन और पालन जीवनको स्थायी आनन्दसे भर देता है। प्रणाम ॥।

- धर्मप्राण सुन्दरसाथजी, नवतनपुरी धाम द्वारा आयोजित कथा, प्रवचन, भजन कीर्तन आदि धर्मके विभिन्न कार्यक्रमोंका लाभ लेनेके लिए Facebook तथा Youtube में "प्रणामी टीबी" (**Pranami tv**) देंखें।
- Android में Google play और Apple में App Store द्वारा krishna pranami App डाउनलोड करें।

गुरु साक्षात् परंब्रह्म

स्वामी श्री १०८ लक्ष्मणदेवजी महाराज

'गुरु' शब्द मात्र व्यक्तिके लिए नहीं अपितु व्यक्तित्वके लिए प्रयुक्त होता है। यह शब्द व्यापक एवं बहुअर्थी है। अतः विद्वानलोग इसका विश्लेषण भी भिन्न भिन्न प्रकारसे करते हैं। जब कोई शिष्य गुरुका अर्थ करता है, तो वह अपने गुरुमें श्रद्धा, आस्था, विश्वास अर्पित करते हुए अभूतपूर्व क्षमताओं व महानताओंसे उनको अलंकृत करता है। उनको अपने जीवनका संस्कार एवं ज्ञान प्रदाता तथा मार्गदर्शक मानता है। शिष्य गुरुको अपने जीवन केन्द्रकी मान्यता प्रदान करता है। सचमुच गुरुकी इसी महत्ता और विशेषताके कारण ही तो संतों, ज्ञानियों और कवियोंने गुरुको "**गुरु साक्षात् परब्रह्म**" कहकर उनकी आज्ञाको बिना शंका, बिना तर्क वितर्कके शिरोधार्य करनेकी बात कही है।

प्रत्येक मनुष्यको किसी न किसी रूपमें गुरुकी आवश्यकता होती है। आध्यात्मिक जगतमें हो या भौतिक जगतमें गुरुकी आवश्यकता तो कहीं भी होती है। परन्तु आध्यात्मिक जगतके गुरु और भौतिक जगतके गुरुमें आकाश पातालकी भिन्नता है। वस्तुतः गुरु भी अनेक प्रकारके होते हैं–जो गुरु सांसारिक ज्ञान प्रदान करते हैं वे शिक्षा गुरु हैं और जो गुरु दीक्षा प्रदान करते हैं वे दीक्षा गुरु कहलाते हैं। किन्तु साधकको आत्म साक्षात्कारका मार्ग प्रशस्त करनेवाले महान गुरुको शास्त्र सद्गुरुके नामसे पुकारता है। महामति श्री प्राणनाथजी भी कहते हैं,

सतगुरु साधो वाको कहिए, जो अगमकी देवे गम।
हद बेहद सब समझावे, भाने मनको भरम॥

शिक्षा गुरु एवं दीक्षा गुरु बहुत सारे मिलते हैं परन्तु साधकको पारका मार्ग बतलाकर अज्ञानान्धकारसे विमुक्त कर पर प्रकाशकी ओर अग्रसर करना एवं आत्मसाक्षात्कार करवाना यह तो सदगुरु ही कर सकते हैं ।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकयाः ।
चक्षुरुन्मिलितंयेन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

ऐसे महान विभूति, लोक हितेच्छु एवं परम शक्ति सम्पन्न सद्गुरु विरले ही प्राप्त होंगे और ऐसे परम कृपालु गुरुदेवके सामीप्यसे ही परमात्माके दर्शन हो सकते हैं । अतः हमें इस तरहके सद्गुरुकी खोज करनी चाहिए । **''खोजत खोजत सतगुरु पाइए, सतगुरु संग करतार''** जब ऐसे महान सद्गुरुकी शरण हमें प्राप्त होगी तब हमारा जीवन सार्थक होगा । क्योंकि सद्गुरु हर प्रकारसे शिष्य एवं साधकका कल्याण चाहते हैं । इसीलिए तो हमारे शास्त्रमें सद्गुरुके विषयमें कहा है,

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

जैसे आदिदेव ब्रह्माजी सृष्टिकी रचना करते हैं उसी प्रकार परम कृपालु गुरुदेव शिष्यके हृदयमें ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, शम, दम, तितीक्षा, अक्रोध, अहिंसा, दया, क्षमा, सहिष्णुता, आदि सद्गुणोंकी दिव्य सम्पदाओंकी सृष्टि करते हैं । अतः सद्गुरुदेवको स्वयं ब्रह्माजीकी उपमा दी गई है। इतना ही नहीं–गुरुदेवको स्वयं भगवान विष्णु कहकर भी सम्बोधित किया है । क्यों... ? क्यों कि जैसे ब्रह्माजी द्वारा निर्मित सृष्टिका पालन भगवान विष्णुजी करते हैं उसी तरह शिष्यके हृदयमें खुदके बोये गए दैवी सम्पदा एवं सद्गुण रूपी पौधोंकी सुरक्षा एवं संवर्धन कर उन सर्जित सद्गुणोंको पल्लवित पुष्पित एवं फलित करनेका

काम शिष्यके हितेच्छु गुरुदेव स्वयं करते हैं । इसीलिए गुरुदेवको "**गुरुर्विष्णु**" कहकर भी सम्बोधन किया है ।

सद्‌गुरुको भगवान शंकरकी भी उपमा दी गई है तो हम सोचते होंगे कि शंकर तो संहार करते हैं तो गुरुदेव कैसे शंकर जैसे हुए । वास्तवमें गुरुदेव शंकरका भी काम करते हैं । कैसे... ? जैसे शंकर सृष्टिका संहार करते हैं उसी प्रकार, परम कृपालु गुरुदेव शिष्यके हृदयमें उत्पन्न हुए, विकारोंका तत्क्षण विनाश करते हैं ।

इन सभी उपमाओंके होते हुए भी इनको पर्याप्त न मानकर सद्‌गुरुको "**गुरुः साक्षात् परंब्रह्म**" कहकर साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर, अखिलेश्वर, अखिल ब्रह्मांड नायक परमात्माके नामसे सम्बोधित किया है । सद्‌गुरुको परमात्माके ही दूसरे रूप माना गया है । परमात्मा ही जीवमात्रके कल्याणके लिए अलग स्वरूप धारण कर आते हैं । इसीलिए तो परमात्माका अनेक स्वरूप बतलाया गया है । प्रत्येक जीवको परमात्माके दर्शन व प्राप्ति सहजसे नहीं हो पाता । इसीलिए सद्‌गुरु कृपाकर जीवको परमात्माकी तरफका मार्ग प्रशस्त करनेके लिए आते हैं । जैसे असली चन्दन पाना असंभव है । फिर भी चन्दनकी सुगन्धि हवाके माध्यमसे यत्र तत्र फैलती है तो आसपासके नीम, आदि कड़वे कटीले तीखे वृक्षोंको भी सुगंधित कर देती है । तो यहाँ परमात्माको चन्दनकी उपमा और सन्त भगवन्त एवं गुरुदेवको समीरकी उपमा दी है । उसी समीरसे ही तो सभीको सुगंधी मिल सकती है ।

इसप्रकार सद्‌गुरुदेव सदा ही शिष्यकी हितेच्छु बनते हैं और अनेक उपाय कर शिष्यको परमात्मा प्राप्तिके योग्य बनाते हैं । कहते हैं,

गुरु कुम्हार हम घट बने, घड़ घड़ काढे खोट ।
भीतर हाथ सहार दे, बाहर बाहर चोट ॥

जैसे कुम्हार घटको बनाता है, उसी प्रकार गुरुदेव भी शिष्यको

तैयार करते हैं । किन्तु अन्तर इतना है कि कुम्हार कुछ पानेकी इच्छा और आकांक्षा लेकर घड़ोंका निर्माण करता है, परन्तु सद्गुरु शिष्यके जीवन रूपी घडेको बनाकर उससे किञ्चितमात्र भी पानेकी आकांक्षा नहीं रखते । वे तो पूर्ण हैं । आवश्यकता तो उसको होती है जिसके पास कुछ न हो । सद्गुरु तो स्वयंमें पूर्ण होते हैं । सद्गुरु साक्षात् वैराग्यके आगार होते हैं, ज्ञानके भण्डार होते हैं, शान्तिके दातार होते हैं, सुखके खानी होते हैं । उनको कभी किसीसे कुछ पानेकी अभिलाषा होती ही नहीं । किन्तु किसीसे कुछ प्राप्त भी हो जाए तो वे समाज सेवाके लिए ही स्वीकार कर लेते हैं । उपयोग करते हैं । उनका अपना जीवन ही समाजके लिए होता है । ऐसे सद्गुरु ही हमारे माता-पिता, भाई, बन्धु, आस-मित्र तथा स्वजन हैं । उनके बिना व्रत तप, धारण, आदि सब असफल है । वे ही हृदयका प्यार और आनन्दका समारोह हैं ।

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजको साक्षात् आनन्द स्वरूपा कहा गया है । स्वयं परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण जिनके गुरु बने एवं उनके अन्तर हृदयमें विराजमान हुए । अतः कहा **''गुरु साक्षात् परंब्रह्म''** सद्गुरुश्री देवचन्द्रजी अपने हृदयमें विराजमान सत् परमात्माका पहिचान ब्रह्मसृष्टि तथा संपूर्ण जगतको करवानेके कारण ही सद्गुरु कहलाये । वे अशुभको हरने वाले एवं मंगलपद प्रदान करनेवाले हैं **''अशुभ हरण मंगल करन, श्री देवचन्द्रजी नाम''** ऐसे परम कृपालु गुरुदेव अमृतसे बढ़कर मधुर रसकी धारा हैं । ऐसी अमृत धारा द्वारा ही हमारा जीवन हराभरा एवं शान्तिमय बनेगा । सद्गुरुके श्री चरण तथा चरणक्षेत्र दोनों ही शिष्यके लिये मोक्ष धाम हैं । जहां जानेपर जीवनके संपूर्ण शोक सन्ताप विनाश हो जाते हैं । ऐसे स्थल श्री ५ नवतनपुरी धामके प्रति स्वामी श्री प्राणनाथजी कहते हैं, **''सद्गुरु चरणको क्षेत्र है, जहां जाये सब शोक''** कहते हैं-यदि कोई जान बुझकर भी पापका आचरण करे तो अनेक तीर्थोंमें जाकर

स्नान, पान आदि करनेसे भी वह शुद्ध नहीं होता । व्रत और तपसे भी उसका पाप नहीं धुलता । प्रायश्चित भी व्यर्थ है । परन्तु प्रलय कालकी अग्निके समान गुरु चरण तथा चरण क्षेत्रमें जाकर गुरुदेवके चरणाश्रय होनेसे तीनों प्रकारके ताप एवं पाप नष्ट हो जाते हैं। ऐसे परम कल्याणकारी सद्गुरुदेवके दर्शन और स्पर्शादिसे हमारा जीवन धन्य होगा ।

शिष्य एवं साधकका भी कर्तव्य बनता है कि ऐसे सद्गुरुके प्रति समर्पित होकर ऋणसे उऋण हों । वस्तुतः सदगुरुके ऋणसे तो हम कभी उऋण नहीं बन सकते । फिर भी श्रद्धासे उनके चरणमें पुष्प अर्पित कर स्वयंको धन्य समझनेका एक महान दिन है, महान पर्व है "**गुरुपूर्णिमा**" जिस दिन शिष्यजन एवं साधकजन गुरुदेवके दर्शन व उनके प्रति भाव व्यक्त करनेके लिए उनके चरण शरणमें पहुँच जाते हैं । और हर्षोल्लासपूर्वक यह पर्व मनाते हैं ।

हर वर्षकी भांति इस वर्ष भी महामति श्री प्राणनाथजीके अनुसार "**सद्गुरु चरणको क्षेत्र है, जहां जाये सब शोक**" ऐसी महिमामण्डित "**उत्तम चौदे भवनमां**" त्रैलोकमें उत्तम केवल सुन्दरसाथका ही नहीं अपितु स्वामी श्री प्राणनाथजी भी '**उत्तम चौदे भवनमां**' कहकर सर्वातिशय महत्त्व प्रदान करते हैं ऐसे परम वन्दनीय स्थल श्री ५ नवतनपुरी धाममें भक्तोंजनोंने अपने सद्गुरुके प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त किया । वर्तमान समयके सद्गुरुश्रीके सान्निध्यमें हर्षोल्लास पूर्वक इस महान पर्वको धूम धामसे मनाया । उनके अमृतवाणीसे अपने जीवनको आप्लावित कर धन्यभागी बने ।

सतगुरुके संग लाग रे, तेरी बिगरी बनेगी ॥
करि सत्संग अंग निर्मल करि ले, बिलसहु अचल सुहाग रे ॥

श्री निजानन्द कथामृत

(ब्रह्मलीन पं. श्री कृष्णदत्त शास्त्री विरचित

निजानन्द चरितामृतसे)

(गतांक पृष्ठ २६ से क्रमश.....)

श्रीजीका धरोल जाना

धरोल (ध्रोल) काठियावाडका एक छोटासा राज्य था। यहाँके राजा ठाकोर साहेब कहे जाते थे। उस (श्रीजीके) समयमें कल्लाजी नामके ठाकोर राज्य करते थे। श्रीजी इनके दरबारमें गए। श्रीजीको जामनगरके दीवानका पुत्र जानकर कल्लाजी ठाकोरने बड़े सन्मानके साथ अपने यहाँ रख लिया। इनकी योग्यता और सदव्यवहारसे प्रसन्न होकर अपने राज्यका सम्पूर्ण कार्यभार आपको सौंपके राज्यके मंत्री पद पर नियुक्त कर दिया।

ह्वै प्रसन्न उहि यह कही, तुमसो मन्त्री और।
देखौं मैं नहीं जगतमें, जईये अन्त न ठौर॥

कहने लगे – आपके समान योग्य मंत्री मुझे जगतमें कोई दृष्टिगोचर नहीं होता। अतः हे मिहिरराजजी ! आप जीवन पर्यन्त मेरे यहाँ कारबार संभालते हुए मंत्री पदको सुशोभित रखिये एवं अन्यत्र जानेका कभी विचार न करें, इस प्रकार विश्वासपूर्वक सब भार श्रीजीको सौंप दिया और वह निश्चित होकर जीवन व्यतीत करने लगा।

श्रीजी जैसे महापुरुषको मंत्रीपद पर नियुक्त कर नृपका राज्यभारसे मुक्त हो जाना स्वभाविक था। परंतु श्रीजीको तो अभी जगतके अनन्त प्राणियोंको भारमुक्त बनाना था। अतः जीवन पर्यन्त मंत्रीपद पर ठहरना कठिन था। दो वर्ष तक आपने राजा, प्रजाको खूब स्तुष्ट किया। उसके बाद राज्यके किसी कार्यवश आपको

अहमदाबाद जाना पड़ा । वहाँका कार्य संपन्न करने आठ मास लगे, तत्पश्चात् आप धरोल वापस लौट आये ।

यद्यपि आपके मंत्रीपद पर होनेसे राजा प्रजा दोनोंको ही पूर्ण सुख था, परंतु अंतरात्मामें श्री निजानंद सदगुरुजीके वियोगका क्षोभ और अध्यात्म विचारोंकी अभिनव स्फूर्ति एवं आंतरिक वैराग्य विद्युतकी भांति प्रतिक्षण चमका करते थे । अतः आपने मंत्री पदका परित्याग निजानन्द सदगुरुके चरणोंमें उपस्थित रहनेका निश्चय किया । राजाके पास जाकर सब वृत्तांत कहा और घर जानेके लिये विदा मांगी ।

कल्लाजी बोले तबे, राज पाट घर जौन ।
तुमरो है अख्तयार सब, करो चित्तसे तौन ॥
और तुमारी दृष्टि में, होई बहुत जन नेक ।
सौंपो ताको आप ही, हम जानत तुम एक ॥
जा जनको तुम सौंपि हौ, सो हमरे सु प्रमान ।
होई हाथ वाके सकल, चलि है काज निदान ॥

(वृत्तांत मु. ४०)

कल्लाजीने कहा- हे मिहिरराजजी ! मैं तो अपनी तरफसे आपको इस कार्यकी सम्पूर्ण सत्ता दे चुका हूँ। यदि आपका जी नहीं लगता तो आप किसी अन्य पुरुषको अपनी तरफसे नियुक्त कर दीजिये । आप चाहे जिस किसीको भी इसे सौंप देंगे, हमें किसी प्रकारका विरोध नहीं है । इस प्रकार अपना कुल भार श्रीजी पर ही डाल दिया ।

इधर श्री निजानंद सदगुरुजीके कलेवर त्यागका समय सन्निकट आ पहुँचा । आपकी चित्तवृत्ति परमधामकी ओर आकृष्ट होने लगी । अतः सबसे कहने लगे कि श्री मिहिरराजजीको शीघ्र बुला लाओ, उनसे

हमें कुछ बातचीत करनी है । निजानंद स्वामीकी इस प्रकारकी बात सुनकर बालबाई श्रीजीको बुलानेके लिये गई । वहां पर जाकर कहा कि आपको निजानंद सदगुरुने बुलाया है, अतः चलिये ।

इधर श्रीजी अपने मंत्रीपद पर दूसरे किसीको नियुक्त कर खुद ही आनेका प्रबंध कर रहे थे, अतः बालबाईसे कह दिया कि- तुम चलो मैं यहाँका कामकाज दूसरेको सौंपकर दो चार दिनोंमें आता हूँ । बालबाईने लौटकर निजानंद सदगुरुसे कहा कि दो चार दिनोंमें काम काजसे निवृत्त होकर आनेको कहा है । परंतु इधर निजानंद सदगुरुको क्षण क्षण भारी हो रहा था, अतः दुबारा विहारीजीको भेजा कि तुम जाकर श्री मिहिरराजजीको बुला लाओ ।

विहारीजी बुलानेको गये तो अवश्य परंतु वहां पर जाकर कह दिया कि निजानंद सदगुरुकी तबियत कुछ खराब है, अतः अम्बर कस्तूरी लेनेको भेजा है । यह सुनकर श्रीजीने तत्काल अम्बर कस्तूरी मंगाकर दे दी और कहने लगे, मैं भी यहांके काम काजसे निवृत्त होकर आ रहा हूँ । इस प्रकार कहकर विहारीजीको विदा किया और स्वयं भी श्री निजानंद सदगुरुजीके चरणों उपस्थित होनेके लिये राज्यके कार्यभारसे मुक्त होनेका प्रयत्न करने लगे । तब तक श्री धामधनी सदगुरुने पुनः विहारीजीको भेजा कि तुम तत्काल श्री मिहिरराजको बुलाकर लाओ, विलम्ब न होने पावे, वे सब साथको सिंधी भाषामें साखी कहकर चर्चा सुनाया करते थे । मेरा चित्त उनमें बहुत लगा है, तुम शीघ्र बुलाकर लाओ ।

श्री सदगुरुजीकी आज्ञानुसार विहारीजी पुनः श्रीजीके पास गए तो अवश्य परंतु बुलानेका नाम फिर भी न लिया । कहने लगे श्री सदगुरुका स्वास्थ्य ठीक नहीं है, कोई औषधि हो तो ढूंढ दीजिये श्रीजीने औषधि लाकर दे दी और कहा कि अब मुझे विशेष विलम्ब नहीं है । थोडा-सा काम रह गया है, उसे भी पूराकर जल्दी आ रहा हूँ ।

विहारीजीको भय लगा था कि श्री निजानन्द सदगुरु श्रीजीको कहीं कुछ सोंप न देवें । इसलिये बारम्बार बहाना बनाकर बुलानेकी बातको दबाते रहे । परन्तु इधर श्री निजानन्द सदगुरुजीके हृदयमें श्रीजीका न होना खटक रहा था । अतः बार बार विहारीजीको कहते रहे तुम जाकर श्री मिहिरराजको जल्दी बुला लाओ मेरा चित्त उनमें लगा हैं। मैं उनको (श्री इन्द्रावतीकी वासनाको) रोते छोडकर परमधामको नहीं जा सकता ।

कह्यो विहारी जू प्रते, वेगि बुलाओ लेखि ।
पैठि सकौं नहिं धाममें, याको रोवत देखि ॥
धाम द्वारा इन्द्रावती, ठाडी रूदन कराई ।
इनके धाम हिरदे विषे, मेरो आसन आई ॥

(वृतान्त मु. ४०)

श्री निजानन्द सदगुरुजीको निकट भविष्यमें अपना कलेवर परित्याग करनेके बाद पांच स्वरूपों सहित श्री इन्द्रवती स्वरूप श्रीजीके धाम दिलमें विराजमान होकर ब्रह्मसृष्टिको जाग्रत करना है । परन्तु जब तक श्री इन्द्रावती स्वरूप श्रीजीका हृदय प्रत्यक्ष रूपसे वियोग दुःखको दूरकर शान्तिका अनुभव न करने लगे, तब तक परोक्ष मिलापका सुख अन्तरात्मामें प्रतीत न होगा । ऐसा जानकर सदगुरु इसी शरीरसे श्रीजीको मिलनेके लिये आतुर हो रहे थे । दूसरी बात धर्मका कार्य श्रीजीके स्वरूप द्वारा ही पूर्ण होना है, अतएव जबतक धर्मका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व श्रीजीको प्रत्यक्षमें न सोंपा दिया जाय, परोक्ष बातको भार नहीं पडता था । अतः श्रीजीसे प्रत्यक्ष बातका भार नहीं पडता था । अतः श्रीजीसे प्रत्यक्ष बातें करनेको आतुर हो उनको बुलानेके लिये विहारीजीसे बार बार कहते रहे ।

जब बालबाईने देखा कि विहारीजी दो बार हो आये तथापि

श्रीजी नहीं आये, तो स्वयं बुलानेको गई । कहने लगीं हे मिहिरराजजी ! तुम्हें क्या हो गया है जो श्री सदगुरुजीके बार बार बुलाने पर भी उनके पास नहीं आते । श्री निजानन्द स्वामी कितने दिनसे कह रहे हैं कि श्री मिहिरराजको जल्दी बुलाओ, धामके द्वार पर इन्द्रावती खड़ी होकर रुदन कर रही है । मैं उसको रोते छोड़कर परमधाम नहीं जा सकता, अतः शीघ्र बुला लाओ ।

श्रीजीने कहा - बालबाई ! मुझसे इस प्रकार स्पष्ट बुलानेकी बात किसीने नहीं कही, नहीं तो मैं कबका उपस्थित हो गया होता । मुझे तो अब आपके कहनेसे विदित हुआ कि श्री निजानन्द सदगुरुको बहुत कष्ट पहुँच रहा है । अस्तु ! मैं आपके साथ चलता हूँ ऐसा कहकर कल्लाजीके पास गए और श्रीसदगुरुके पास जानेको शीघ्र विदा मांगी । कल्लाजीने आपको प्रेमके साथ अपने यहाँसे विदा किया । **(क्रमशः.....)**

पच्चीस पक्ष परमधामकी सात परिक्रमा

(१) प्रथम परिक्रमा :- श्रीरंगभवनके आगेसे प्रारम्भ-चांदनी चौक, तीन वन(जाम्बु, नारंगी, वट), वटपिपलकी चौकी, फूलबाग, नूरबाग, लाल चबूतरा, ताडवन, खड़ोकली, तीनवन (केल, निम्बू, अनार) अमृत वन, चांदनी चौक ।

(२) द्वितीय परिक्रमा :- पाटघाटसे प्रारम्भ होकर वटघाट, वटपुल, कुञ्ज-निकुञ्जवन, कोशर तलाव, चौबीस हांसका महल, पश्चिमकी चौगान, दूबदुलिचा, अन्नवन, बडावन, मधुवन, महावन, पुखराज, पुखराजकी पश्चिम एवं उत्तरकी घांटी, बंगलाजी, पुखराजी ताल, अधबीचका कुण्ड, ढपाचबूतरा, मूलकुण्ड, ढपी जमुनाजी, खुल्ली जमुनाजी, केलपुल, पाटघाट ।

(३) तृतीय परिक्रमा :- जवेरोंकी नहरें । **(४) चौथी परिक्रमा :-** माणिक पहाड़का क्षेत्र जहाँ तीनवन (बडावन, मधुवन, महावन) हैं ।

(५) पांचवीं परिक्रमा :- वनकी नहरें । **(६) छठवीं परिक्रमा :-** छोटी रांग ।
(७) सातवीं परिक्रमा :- बड़ी रांग ।

मेरा नहीं है, परमात्माका है
मेरे लिये नहीं है, परमात्माके लिये है

बन्धन, मुक्ति, भक्ति – सोचना, मानना, स्वीकार करना, भाव रखना इन सबका समान अर्थ है। जो कुछ मेरे पास है, वह मेरा है और मेरे लिये है, ऐसा सोचना ही बन्धन है। वह मेरा नहीं है और मेरे लिये नहीं है, ऐसा सोचना ही मुक्ति है। वह परमात्माका है और परमात्माके लिये है, ऐसा सोचना ही भक्ति है। केवल सोचनेमात्रसे आप बँध जाते हैं, मुक्त हो जाते हैं और भक्त बन जाते हैं।

मेरे पास क्या है – आपके पास केवल तीन चीजें हैं – शरीर, परिवारजन–पति, पत्नी, सन्तान आदि। निजी सामान सम्पत्ति। इस विशाल संसारमें केवल इन तीन चीजोंके बारेमें ही आपके मनमें यह भावना रहती है। ये मेरी हैं, मेरे लिये हैं। इस भावनाका नाम है मोह या ममता।

मोहके नुकसान – दुःख, चिन्ता, अशान्ति, मानसिक तनाव, निराशा, डिप्रेशन आदिका मूल कारण है मोह। मोहसे ही काम, क्रोध, लोभ आदि विकारोंका जन्म होता है, जो नरकके दरवाजे हैं। मोहसे ही अंहकार जैसा खतरनाक शत्रु पैदा हो जाता है, जो मानवका सर्वनाश कर देता है।

विस्मृति – मोहमें आबद्ध मानव तीनों बातोंको भूल जाता है – अपना कर्तव्य, अपना स्वरूप एवं परमात्मा। कर्तव्यकी विस्मृतिसे परिवार एवं समाजमें अशान्ति हो जाती है। स्वरूपकी विस्मृतिसे वह अपने आपको आत्मा न मानकर शरीर मानने लगता है और शरीरमें फँस जाता है। परमात्माकी विस्मृतिसे वह नाशवान् जगत्में भटक एवं अटक जाता है और जन्म मरणके कुचक्रमें फँस जाता है। श्री मद्भगवद्गीतामें कहा गया है, अर्जुनको मोह हो गया। वह दुःख एवं सन्देहके दलदलमें फँस गया। श्री

कृष्णजीने गीताका उपदेश दिया जिससे उसका मोह मिट गया और उसको सब कुछ याद आ गया। उसने भगवान्‌से कहा,

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत । (१८/७३)

हे अच्युत ! आपकी कृपासे मेरा मोह नष्ट हो गया है और मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है।

दुर्गति - मोहके कारण ही आप पूरे जीवनभर इन तीन चीजोंकी चिन्तामें आबद्ध रहते हैं और इनकी चिन्तामें ही शरीरका परित्याग करते हैं। संत वाणी एवं धर्मग्रन्थोंके अनुसार अन्तिम समयमें पुत्र, पत्नी, लक्ष्मी(रुपये), भवनकी याद आनेसे मरनेके बाद बार-बार क्रमशः सूकर, वेश्या, साँप और प्रेतकी योनि मिलती है। **अन्त मति सा गति**। अन्तिम समयमें परमात्माकी स्मृतिसे कल्याण हो जाता है।

मोह नहीं है - किसी भी व्यक्ति एवं वस्तुको मेरा मानना मोह नहीं है। परिवारजनोंके साथ रहना वस्तुओंका सदुपयोग करना भी मोह नहीं है। आप सोचते हैं - यह मेरी माँ है, यह मेरा पुत्र है, यह मेरी पत्नी है, ये मेरे पति हैं, यह मेरा मकान है, दुकान है, कारखाना है -ऐसा सोचना या मानना मोह नहीं है। यदि आप इनको मेरा नहीं मानेंगे तो आप इनके प्रति अपने कर्तव्यका पालन ही नहीं कर पायेंगे। मेरा मानकर ही बहनें अपने-अपने जन्मते बच्चोंको संभालती हैं, मेरा मानकर ही माता-पिता अपने पुत्र-पुत्रियोंका लालन पालन करते हैं, पढ़ाते हैं, योग्य बनाते हैं, विवाह करते हैं। मेरा मानकर ही परिवारजन अपने बिमार, वृद्ध एवं असमर्थ परिवारजनोंकी सेवा संभाल करते हैं, मेरा मानकर ही आप अपने व्यापार उद्योग, सामान सम्पत्तिको संभालते हैं।

मोह है - जिनको आप मेरा मानते हैं, वे बने ही रहें, उनका वियोग न हो - इस इच्छाका नाम है - मोह। शरीर सदैव स्वस्थ ही रहे, बना ही रहे, परिवारजन बने ही रहें, सामान सम्पत्ति बनी ही रहे - इस इच्छाको मोह कहते

हैं। आप सोचते हैं - भूतकालमें इनसे मुझे बहुत सुख मिला था, ये मेरे काम आये थे, वर्तमानमें भी मुझे इनसे सुख मिल रहा है, ये मेरे काम आ रहे हैं, भविष्यमें भी इनसे मुझे सुख मिलेगा, ये मेरे काम आयेंगे - इसलिये ये सब बने रहें - इस इच्छाका नाम है - **मोह**। सोचिये, क्या इनको बनाये रखना आपके वशकी बात है। नहीं, कदापि नहीं। यदि ये नही बने रहे, इनका वियोग हो गया तो आपको भीषण दु:ख होगा। वियोग अवश्य होगा, या तो आप इनको पहले छोड़ेंगे या आपको ये पहले छोड़ेगे।

मेरा नहीं है, परमात्माका है। मेरा नहीं है इसका अर्थ है - मैं मालिक नहीं हूँ। परमात्माका है इसका अर्थ है प्रभु मालिक हैं। शरीर, परिवारजन, सामान सम्पत्तिके मालिक प्रभु हैं, मैं नहीं। उन्होंने अपनी चीजें विशेष उद्देश्यसे कुछ समयके लिये मुझे सौंपी हैं।

कारण - प्रभु मालिक क्यों हैं, मैं मालिक क्यों नहीं हूँ -इसके निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण कारण है।

१) **बनाना :** इन तीनों चीजोंको परमात्माने बनाया है, मैने नहीं। मैने तो अपने शरीरको भी नहीं बनाया है।

२) **नियन्त्रण :** रखनेकी दृष्टिसे इनपर पूर्णतया परमात्माका नियन्त्रण चलता है, मेरा लेशमात्र भी नियन्त्रण नहीं चलता है। मैं अपने शरीरको भी जबतक चाहूँ तबतक, जैसा चाहूँ वैसा, जहाँ चाहूँ वहाँ नहीं रख सकता।

३) **व्यवस्था :** शरीरको जीवित रखनेके लिये तीन अत्यावश्यक वस्तुओंकी जरूरत होती है - स्वास, हवा, जल। शरीरको कुशलतापूर्वक रखनेके लिये अनेक सामान्य वस्तुओंकी जरूरत होती है, जैसे - भोजन, वस्त्र, आवास आदि। इन सबको बनाने एवं इनकी व्यवस्था करनेवाले परमात्मा हैं। मैं नहीं। मनुष्य किसी भी चीजको बना ही नहीं सकता। वह तो परमात्माकी बनायी हुई चीजोंका रूप, रंग, स्थान आदि ही बदलता है।

४) **संभाल :** मालिक होनेके नाते इनको संभालनेकी मुख्य जिम्मेवारी,

लगभग ९९ प्रतिशत परमात्माकी है, मेरी जिम्मेवारी कम, केवल एक प्रतिशत है। कैसे ? इसके निम्न तर्क हैं, पहला, इस शरीरके भीतर एवं बाहर अनेक प्रकारके अंग लगे हुए हैं। हृदय, लीवर, किडनी, फेफड़े, मस्तिष्क तन्त्र, आमाशय तन्त्र आदि भीतरके अंग हैं। आखें, कान, नाक, जीभ, दाँत, हाथ आदि बाहरके अंग हैं। तुलनात्मक दृष्टिसे बाहरके अंगोंकी तुलनामें भीतरके अंग ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं। भीतरके महत्त्वपूर्ण अंगोंको परमात्मा संभालते हैं। बाहरी कम महत्त्वपूर्ण अंगोंको संभालनेकी जिम्मेवारी मेरी है। दूसरा, जो कार्य हैं - भोजन करना और भोजनके बादका कार्य। बादका कार्य है, भोजन पचाना, रक्त बनाना, उस रक्तको नसोमें भेजना, भोजनकी शक्तिको शरीरके रोम रोमतक पहुँचाकर शरीरका सन्तुलित विकास करना आदि। भोजन करनेका कम महत्त्वूपूर्ण कार्य परमात्माने मुझे सौंपा है। भोजनके बादका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण जटिल एवं कठिन कार्य परमात्मा करते हैं। तीसरा, गहरी नींदमें इस शरीरको पूर्णतया परमात्मा संभालते हैं, उस समय मुझे तो यह भी पता नहीं रहता कि मेरा शरीर कहाँ है, किस अवस्थामें है।

प्रभाव - तीनों चीजें मेरी नहीं हैं, मैं इनका मालिक नहीं हूँ इस मान्यताका प्रभाव यह होगा कि आप इनकी चिन्ता एवं इनके न रहनेके भयसे मुक्त हो जायँगे। परमात्मा मालिक हैं - इस मान्यताका प्रभाव यह होगा कि आपके जीवनमें परमात्माकी अखण्ड स्मृति जाग्रत हो जायगी। परमात्माके नाते ये चीजें आपको प्रिय लगेंगी, इनकी संभाल एवं सेवा होगी।

मेरे लिये नहीं है, परमात्माके लिये है - ये तीनों चीजें मेरे लिये नहीं हैं इसका अर्थ है - ये तीनों चीजें मुझे वह नहीं दे सकतीं जो मैं चाहता हूँ, जो मेरी माँग है। मै चाहता कि मेरा दुःख, चिन्ता, भय, अशान्ति, मानसिक तनाव सदैवके लिये सर्वांशमें मिट जाय, मैं जन्म-मरणके कुचक्रसे मुक्त जो जाऊँ, मुझे स्थायी प्रसन्नता, परम शान्ति, परम आनन्द मिल जाय, मुझे परमात्माके दर्शन हो जायँ, मैं परमात्माका भक्त बन जाऊँ। अनेक वर्षोंसे ये चीजें मेरे पास हैं, फिर भी मेरी यह माँग पूरी नहीं हुई। **स्मरण रहे**-परिवारजनों

और सामान सम्पत्तिके द्वारा आपके शरीरको सुखसामग्री एवं सुख-सुविधाएँ मिलती हैं । शरीरके द्वारा आपको इन्द्रियजन्य क्षणिक दुःखमिश्रित सुख मिलता है, आपको शान्ति नहीं मिलती है ।

परमात्माके लिये है - इसका अर्थ है - परमात्माको प्रेम देनेके लिये है । परमात्मा मानव हृदयके प्रेमके भूखे हैं, प्रेमके प्यासे हैं ।

प्रेम - प्रेमका अर्थ है प्रसन्नता । परमात्माको प्रेम देनेका अर्थ है । परमात्माको प्रसन्नता देनेकी भावना रखना और इन तीनोंके द्वारा परमात्माको अपार, असीम अनन्त प्रेम देना ।

कैसे दें प्रेम - परमात्माको प्रेम देनेकी विधि इस प्रकार है

१. **स्मृति** - हर समय, हर परिस्थिति, हर अवस्थामें, हर स्थानपर आपको यह बात भलीभाँति याद रहनी चाहिये कि ये सभी परमात्माकी हैं, इनके मालिक परमात्मा हैं और इस यादका आपके जीवनमें यह प्रभाव होना चाहिये कि इनमेंसे कोई भी चीज परमात्मा वापस लें तो आपको दुःख, चिन्ता, अशान्ति न हो । आप प्रसन्नतापूर्वक परमात्माकी चीज परमात्माको लौटा दें ।

२. **परमात्माकी प्रसन्नता** - जबतक परमात्माकी ये तीन चीजें आपके पास हैं, तबतक इन तीनोंके साथ आप जो कुछ करें, उसका एकमात्र उद्देश्य रहे परमात्माकी प्रसन्नता, न कि अपना सुख । परमात्माकी प्रसन्नताके लिये सब कुछ करना है, अपने सुखके लिये कुछ भी नहीं करना है ।

३. **सामान सम्पत्ति** - सूईसे लेकर हीरे मोतीतक आपके पास जो भी सामान है - खेत, मकान, जमीन, जायदादके रूपमें जो भी सम्पत्ति है, उसको परमात्माकी धरोहर मानकर सावधानीसे संभालकर रखें, सुरक्षित रखें, उसका सदुपयोग करें और मनमें यह भावना रखें कि इससे मेरे परमात्माको बहुत प्रसन्नता होगी ।

४. **शरीर** - परमात्माने आपको तीन शरीर दिये हैं - स्थूल, सूक्ष्म, कारण। तीनों शरीरोंको परमात्माके मेहमान मानकर, परमात्माकी प्रसन्नताके लिये इनकी इस प्रकार सेवा करें - स्थूल शरीरको श्रमी, संयमी, सदाचारी और स्वावलम्बी रखें। सूक्ष्म शरीरको ममता, कामना, राग द्वेष, दीनता एवं अभिमानसे मुक्त करके निर्मल और पवित्र बना लें। कारण शरीरको कर्तापनके अभिमानसे मुक्त करके सर्वथा अहंकारशून्य बनाकर इसके अस्तित्वको मिटा दें।

५. **परिवारजन** - इस सत्यको सदैव याद रखें - परिवारजन साक्षात् परमात्माके दिए हुए हैं, मैं उनका सेवक हूँ। इस भावसे परिवारजनोंकी भरपूर सेवा करें। उनको सुख, सुविधा, सम्मान, प्रेम, प्रसन्नता दें, उनके प्रति हितभाव रखें, उनका हित करें। उनकी सेवासे आप परमात्माके महान् भक्त बन जायँगे।

६. **कार्य** - प्रातःकाल उठनेसे लेकर रात्रिमें सोनेतक आप अपने शरीर घर, परिवार, नौकरी, व्यापार, समाज आदिके विभिन्न कार्य करते हैं। इन कार्योंको परमात्माके कार्य मानकर, परमात्माकी प्रसन्नताके लिये पूरी सावधानीसे करें। यह भी परमात्माकी ही पूजा है।

७. **साधना** - पूजाके कमरेमें बैठकर अथवा पूजाघरके बाहर आप पूजा पाठ, जप तप, भजन कीर्तन, व्रत, उपवास, तीर्थ, दान आदिके रूपमें जो भी साधना करते हैं, वह परमात्माकी प्रसन्नताके लिये करें।

८. **प्रेमी भक्त** - जो परमात्माको प्रेम देता है, वह है परमात्माका प्रेमी भक्त। शरीर, परिवारजन, सामान सम्पत्तिके द्वारा उपर्युक्त तरीकेसे परमात्माको प्रेम देकर आप परमात्माके प्रेमी भक्त बन जायँ। प्रणाम।

संकलन - भीमचन्द्र प्रजापति

अच्छी शिक्षा

एक बहुत बड़ा विद्वान राजाके बेटेको पढ़ाता था। वह उसे बेहद डांटता और मारता रहता था। एक दिन मजबूर होकर लड़केने पिताके पास जाकर शिकायत की और अपना घायल शरीर भी दिखाया। राजाका दिल भर आया। उसने शिक्षकको बुलवाया और कहा, तू मेरे बच्चेको जितना झिड़कता और मारता है, इतना आम लोगोंके बच्चोंको नहीं, इसकी वजह क्या है ? शिक्षक बोला, वजह यह है कि यों तो सोच-समझकर बोलना और अच्छे काम करना सब लोगोंके लिये जरूरी है, लेकिन राजाके लिये खासतौरसे जरूरी है। जो बात उनकी जिह्वासे निकलेगी या जो काम उनके हाथसे होगा, वह सारी दुनियामें फैल जाएगा, जबकि आम लोगोंकी बात और कामका इतना असर नहीं होता। गरीब व सामान्य व्यक्तिमें सौ अवगुण हों तो भी उसे जाननेवाले एवं टिप्पणी करनेवाले कम ही होंगे किन्तु राजासे एक बुरा कार्य हो जाए, तो उसका असर राज्यके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक हो जाएगा। इसलिए अन्य बच्चोंके मुकाबलेमें राजाके बेटेके चरित्रको संवारनेकी शिक्षकको ज्यादा कोशिश करनी चाहिए। जिस बच्चेको बचपनसे सही नहीं सिखाया जाएगा वह जब बड़ा होगा, तो उसमें कोई गुण नहीं होगा। जब तक लकड़ी गीली रहती है, उसे कैसे ही मोड़ लो। जब वह सूख जाती है, तो आग में रखकर ही उसे सीधा किया जा सकता है। जो लड़का सिखानेवालेका अनुशासन सहन नहीं कर सकता, उसे लोगोंका उपालम्भ सहना पड़ता है। राजाको उस योग्य शिक्षककी बात पसंद आई उसने खुश होकर उसे पुरस्कृत किया।

सूचना : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाके सम्पूर्ण सदस्य एवं पाठकोंको सूचित किया जाता है कि जिनका वार्षिक शुल्क पूर्ण हो गया और "Renew" से शुरु हो गया है तो कृपया पत्रिका पुनः प्राप्त करनेके लिए ग्राहक (PGY, PGL, PHY, PHL, PFL) नम्बरके साथ आप पत्रिका कार्यालय, श्री ५ नवतनपुरी धाममें मनीऑडर भेज दें। पत्रिकाकी अधिक जानकारीके लिए सम्पर्क करें।

कार्यालय : 0288-2670829 ws- 08511226600

दृष्टान्त बोध

विनम्र व्यक्ति झुककर दुनियामें कई काम कर सकता है जबकि अकड़की वजहसे नुकसान ही होते हैं

महाभारत युद्ध समाप्त हो गया था। पांडवोंकी जीत हुई और युधिष्ठिर राजा बन गए थे। एक दिन श्री कृष्णजीने सभी पांडवोंको भीष्म पितामहसे राजधर्मका ज्ञान लेनेकी सलाह दी। भीष्म पितामह बाणोंकी शय्या पर थे, वे प्राण त्यागनेकेलिए सूर्यकेउत्तरायण होनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

श्री कृष्णजीके आग्रह पर भीष्म पितामहने सभी पांडवोंको ज्ञानकी बहुत सारी बातें समझाई। उनमेंसे एक बात ये थी कि विनम्रता बड़े और समर्थ लोगोंकेलिए आभूषणकी तरह होती है। एक लक्षण होता है दब जाना और दूसरा लक्षण है झुक जाना, डरकी वजहसे या किसी मजबूरीकी वजहसे। विनम्रता इन दोनों लक्षणोंसे ऊपर होती है।

विनम्रता स्वेच्छासे एक सदाचारकी तरह है। ये समझानेके लिए भीष्म पितामहने कहा, 'नदी जब समुद्र तक पहुंचती है तो अपने बहावके साथ वह कई बड़े-बड़े पेड़ और उनकी शाखाएं लेकर आती है। एक दिन समुद्रने नदीसे पूछा कि तुम अपने साथ छोटे पौधे और छोटे वृक्षोंको बहाकर क्यों नहीं लाती हो ?

नदीने जवाब दिया कि जब मैं पूरे वेगसे बहती हूँ तो छोटे पौधे और छोटे पेड़ झुक जाते हैं, मुझे रास्ता दे देते हैं तो वे बच जाते हैं। जबकि बड़े-बड़े पेड़ झुकते नहीं, अड़ जाते हैं तो टूट जाते हैं और मैं इन्हें बहाकर ले आती हूँ।'

सीख - भीष्म पितामहने इस उदाहरणकी मददसे बताया है कि जीवनमें कई बार विपरीत परिस्थितियाँ आती हैं। उस समय विनम्रता शस्त्र और कवचकी तरह काम करती है। विनम्र व्यक्ति झुककर दुनियामें कई काम कर सकता है। जबकि अकड़की वजहसे नुकसान ही होते हैं।

घृत कुमारी (एलोवेरा)

१. एक गिलास ठंडे नारियल पानीमें दोसे चार चम्मच घृत कुमारीका रस या पल्प(गूदा) मिलाकर पीनेसे लू लगनेका खतरा नहीं रहता है ।

२. घृत कुमारीका जूस बवासीर, डायबिटीज़ तथा पेटके विकारोंको दूर करता है ।

३. घृत कुमारीके पल्प(गुदे)में मुल्तानी मिट्टी या चंदन पाऊडरमें मिलाकर लगानेसे त्वचाके कील मुहांसे ठीक हो जाते हैं ।

४. सुबह उठकर खाली पेट घृत कुमारीकी पत्तियोंके रसका सेवन करनेसे पेटमें कब्ज़की समस्यासे निजात मिलती है ।

५. गर्मी, उमस और बारिशके कारण निकलने वाले फोड़े फुंसियों पर भी इसका रस लगाने पर आराम मिलता है और तीन चार बार लगानेसे वो ठीक भी हो जाते हैं । इसके अलावा शारीरिक ऊर्जा, पाचन क्रिया तथा त्वचा पुनर्निर्माणके लिए भी घृत कुमारीका रस और पल्प(गूदा) काफी लाभदायक होता है ।

६. घृत कुमारीके कांटेदार पत्तियोंको छीलकर रस निकाला जाता है । ३ से ४ चम्मच रस सुबह खाली पेट लेने से दिनभर शरीरमें चुस्ती व स्फूर्ति बनी रहती है ।

७. घृत कुमारीका जूस पीनेसे कब्जकी बीमारीमें फायदा मिलता है ।

८. घृत कुमारीका जूस पीनेसे शरीरमें शुगरका स्तर उचित रूपसे बना रहता है ।

९. कुमारीका जूस ब्लडको प्यूरीफाई करता है साथ ही हीमोग्लोबिनकी कमीको पूरा करता है ।

१०. घृत कुमारीका जूस त्वचाकी नमीको बनाए रखता है जिससे त्वचा स्वस्थ्य दिखती है । यह स्किनके कोलेजन और लचीलेपनको बढाकर स्किनको जवान और खूबसूरत बनाता है ।

११. घृत कुमारीके जूसका नियमित रूपसे सेवन करनेसे त्वचा भीतरसे खूबसूरत बनती है और बढती उम्रसे त्वचा पर होने वाले कुप्रभाव भी कम होते हैं ।

१२. घृत कुमारीके जूसका हर रोज सेवन करनेसे शरीरके जोडोंके दर्दको कम किया जा सकता है ।

१३. घृत कुमारीको सौंदर्य निखारके लिए हर्बल कॉस्मेटिक प्रोडक्ट जैसे घृत कुमारी जैल, बॉडी लोशन, हेयर जैल, स्किन जैल, शैंपू, साबुन, फेशियल फोम आदिमें प्रयोग किया जा रहा है ।

१४. अगर त्वचा पर कोई पुराना निशान हो या त्वचा सख्त हो गई हो तो इसके गूदे और शहदको उस पर लगाकर तीन चार घंटेके लिए छोड़ दो और फिर धो दो ।

१५. अगर गठियाकी बीमारी है, तो इसके गूदेको सरसोंके तेलमें मिलाकर मालिश करो और इसका गूदा गर्म करके बांधलो । अगर साथ ही थोडा गूदा खाली पेट खा लिया जाए तो सोने पर सुहागा होगा ।

१६. अगर पाचन ठीक तरहसे नहीं हो रहा या लीवर खराब है तो इसे सब्जी या लड्डू बनाकर खाएं; या फिर इसका गूदा खाली पेट खा लो ।

१७. आँखें मूँद कर घृतकुमारीके गूदेको रूईमें लगाकर एक दो घंटेके लिए पलकों पर रखकर पट्टी बांध लो । इससे आँखके सभी रोग दूर होंगे और आँखोंकी रोशनी भी बढ़ेगी ।

१८. गंजे भी घृतकुमारीके गूदेको सिर पर नियमित रूपसे लगाएँ, तो निश्चित रूपसे फायदा होगा हर तरहकी सूजनमें घृतकुमारीका लेप फायदा करता है ।

१९. घृतकुमारीको नियमित रूपसे लेने पर रक्तअल्पताकी बीमारी ठीक होती है ।

२०. घृतकुमारीके गूदेको खानेसे शरीरके हारमोन भी संतुलित रहते हैं ।

२१. घृतकुमारीको प्रयोग करनेसे कैंसरमें भी लाभ देखा गया है ।

२२. खांसीमें इसका टुकड़ा लेकर गर्म करें, फिर उसपर काली मिर्च और काला नमक लगाकर खाएं ।

२३. खुजली या शीत पित्त होने पर घृतकुमारी, नारियल तेल, कपूर और गेरूका शरीर पर लेप करके रखें और कुछ देर बाद नहा लें ।

२४. बवासीर(Piles) रोगींके लिए तो यह रामबाण औषधि है । घृतकुमारीकी सब्जी बनाकर खानेसे लाभ होता है और इसका रस पीनेसे पेट ठीक रहेगा ।

संकलन - योगी

श्री ५ नवतनपुरी धाममें गत जून २०२१ महीनेमें दान भेटकी सेवा करनेवाले सुन्दरसाथ ।

₹ ५१००/- साधना अग्रवाल - **मुम्बई** ।

₹ ५०५०/- जगन छाबरा - **दिल्ली** ।

₹ ५०००/- असीम मदन खुराना - **दिल्ली** ।

₹ २०००/- श्री संतोषकुमार सिंघल - **लखनऊ (यू.पी.)** ।

गोटा पारायणके लिए सेवा ₹ २५००/ प्रदान करनेवाले सुन्दरसाथजी

१) श्रीमती रजनी जगन छाबरा - **दिल्ली** । २) श्रीमती इन्द्रावती जगदीशप्रसाद पाण्डे - **मुम्बई** । ३) परमधामवासी शुभलक्ष्मी शाह - **काठमाडौं (नेपाल)** ।
४) परमधामवासी दीनदयाल अग्रवाल - **बेंगलोर** । हस्ते - अंकित एवं पुष्पा अग्रवाल । (दो गोटा पारायणकी सेवा) ।

साप्ताहिक पारायणके लिए सेवा ₹ २१००/ प्रदान करनेवाले सुन्दरसाथजी

परमधामवासी जी.एल. साल्वे एवं हिमांशु साल्वे - **जेताना (उदयपुर)** ।

श्री राजभोगके लिए सेवा ₹ ११००/ प्रदान करनेवाले सुन्दरसाथजी

१) मनीष किरोडीमल अग्रवाल - **थाना** । २) हिरेन सुदाणी - **सुरत** ।
३) परमधामवासी श्री चन्द्रकांत शर्मा - **पन्ना** । हस्ते - श्रीकांत शर्मा - **अहमदाबाद** ।
४) परमधामवासी शुभलक्ष्मी शाह - **काठमाडौं** ।

रसोईकी सेवा :- १) परमधामवासी श्री संदिप पंचाल - **प्रतापगढ़ (राजस्थान)** ।
२) नारायण दीपक पाठक - **यू.एस.ए.** ।

गोटा पारायण :- १) परमधामवासी श्री जेठालाल साल्वी - **जेताना (राजस्थान)** ।
२) श्रीमती रजनी एवं जगन छाबरा - **दिल्ली** ।

गौशालाकी सेवा

₹ २१०००/- ब्रिजेश शुभाष परनामी - **मुम्बई** ।

उपर्युक्त सभी सेवाओमें योगदान प्रदान करने वाले सभी सुन्दरसाथको श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आचार्यपीठ श्री ५ नवतनपुरी धामके शुभाशीर्वाद । आप सभीकी मनोकामनायें श्री राजजी महाराज पूर्ण करें । आपकी आध्यात्मिक और भौतिक दोनों संपदाकी अभिवृद्धि हो ऐसी शुभकामना सह प्रणाम ।

श्री ५ नवतनपुरी धामद्वारा मूल मिलावा वाडी में आमके बगींचाका शुभारंभ पाठ एवं वृक्षारोपण ।

श्री ५ नवतनपुरी धाममें योग दिवस पर विशेष कार्यक्रम ।

RNI NO. GUJBIL/2006/18311, Postal Reg.No.Jam/GJN-1/2020-21
Validity : Upto 31-12-2023, Date of Publication : 10th of Every Month, Date of Posting : 16th of Every Month
Subscription : Annual Rs.150/-, 15 Years Rs.1500/-, No. of Pages : 36

प्राणमी ग्लोबल स्कूलमें टीकाकरणका चौथा कार्यक्रम ।

गायोंके घास चाराके लिए सिंचाई साधन रेन गनका शुभारंभ ।

श्री ५ नवतनपुरी धाममें रूम सेवा का चेक अर्पण कारते हुए मूलजीभाई एवं केसर बेन परसाणा परिवार राजकोट ।